॥ बेसब्री ॥

बेसब्री से चौराहो की है इन्तेज़ारी लेकिन,
रास्ता है की लीक से हटने नहीं देता
किसी और धारा से मिलने नहीं देता ॥

बेसब्री से चाबी की है इन्तेज़ारी लेकिन,
ताला है की उस पार जाने नहीं देता
कहीं और जाकर सांस लेने नहीं देता ॥

बेसब्री से स्वरों की है इन्तेज़ारी लेकिन,
शोर है की ध्यान लगने नहीं देता
नाद का सम्मोहन चखने नहीं देता ॥

बेसब्री से सुकून की है इन्तेज़ारी लेकिन,
चित्त है की मन शांत होने नहीं देता
शून्यत्व का आभास करने नहीं देता ॥

बेसब्री से है इन्तेज़ारी कुछ अवकाश की जिससे,
ठहरकर, थमकर, ठोह ले सकूँ
दर्पण की धूल को साफ़ कर सकूँ
उलझी गांठो को कुछ सुलझा सकूँ, लेकिन,
समय है की मौक़ा मिलने नहीं देता
रोककर सांस को जीने नहीं देता ॥

समीर खांडेकर

१८.०४.२०१४